भारतीय परम्परा™
Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage
वर्ष-३, अंक-३३, मार्च-२०२४

होली है

www.bhartiyaparampara.com

For Private Circulation Only

भारतीय परम्परा™

Let's together discover our Tradition, Culture & Heritage

वर्ष-३, अंक-३३, मार्च-२०२४

संपादक
प्रीति माहेश्वरी

प्रकाशन स्थल
मुम्बई

डिजाइनिंग टीम
MX CREATIVITY

सोशल कनेक्शन

हमसे जुडने के लिए आइकन पर स्पर्श करें

www.bhartiyaparampara.com

paramparabhartiya@gmail.com

मूल्य

आपका कीमती समय

साका कैलेण्डर-१९४५, विक्रम संवत-२०८०, अयान-उत्तरायण, ऋतु-शिशिर

सोम		04 फा. कृ. अष्टमी, मासिक कृष्ण जन्माष्टमी	11 फा. शु. प्रतिपदा	18 फा. शु. नवमी	25 फा. शु. पूर्णिमा, पूर्णिमा व्रत, होलिका दहन
मंगल		05 फा. कृ. नवमी	12 फा. शु. द्वितीया	19 फा. शु. दशमी	26 चैत्र कृ. प्रतिपदा
बुध		06 फा. कृ. एकादशी, विजया एकादशी व्रत	13 फा. शु. चतुर्थी,विनायक संकष्टी चतुर्थी	20 फा. शु. एकादशी, जया एकादशी व्रत, होलाष्टक आरंभ	27 चैत्र कृ. द्वितीया
गुरू		07 फा. कृ. द्वादशी	14 फा. शु. पंचमी	21 फा. शु. द्वादशी	28 चैत्र कृ. तृतीया
शुक्र	01 फा. कृ. षष्ठी, यशोदा जयंती	08 फा. कृ. त्रयोदशी,प्रदोष व्रत,महिला दिवस महाशिवरात्रि	15 फा. शु. षष्ठी, स्कंद षष्ठी	22 फा. शु. त्रयोदशी, प्रदोष व्रत	29 चैत्र कृ. चतुर्थी
शनि	02 फा. कृ. षष्ठी	09 फा. कृ. चतुर्दशी	16 फा. शु. सप्तमी	23 फा. शु. त्रयोदशी, शहीद दिवस	30 चैत्र कृ. पंचमी, श्रीरंग पंचमी
रवि	03 फा. कृ. सप्तमी, शबरी जयंती	10 फा. कृ. अमावस्या, द्वापर युग	17 फा. शु. अष्टमी, मासिक दुर्गाष्टमी	24 फा. शु. चतुर्दशी, छोटी होली	31 चैत्र कृ. षष्ठी

फा. - फाल्गुन कृ. - कृष्ण शु. - शुक्ल

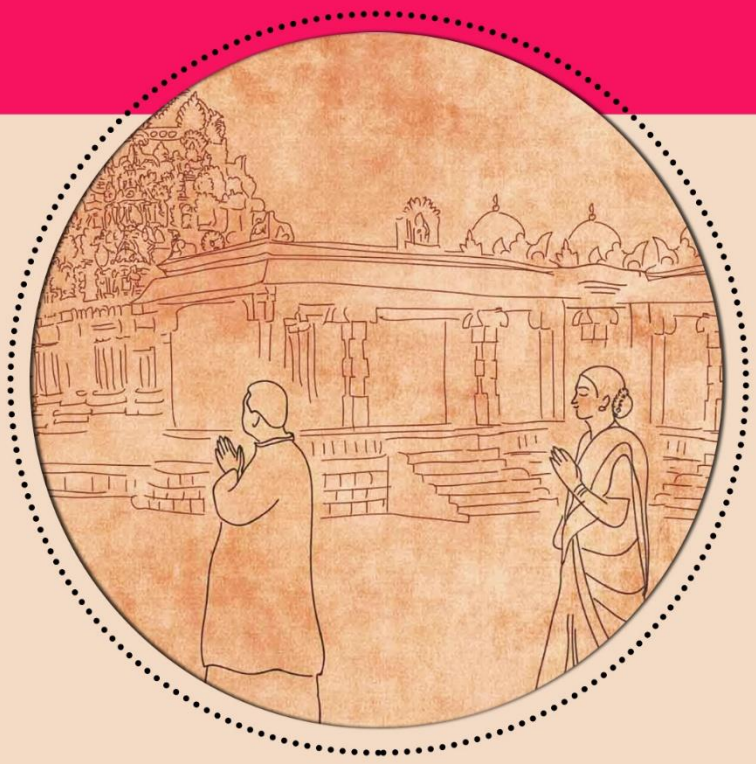

हम मंदिर-मस्जिद में कहीं भी जाते हैं तो प्रदक्षिणा जरूर करते हैं। यह प्रदक्षिणा क्यों की जाती है क्योंकि जब हम ईश्वर के आस-पास परिक्रमा करते हैं तो हमारी तरफ ईश्वर (प्रत्यक्षतः प्राकृतीय) की सकारात्मक शक्ति आकृष्ट होती है और जीवन की नकारात्मकता घटती है।

कई बार हम स्वयं के इर्द गिर्द ही प्रदक्षिणा कर लेते हैं इससे भी ईश्वरीय शक्ति आकृष्ट होती है इसलिए प्रदक्षिणा करते समय यह मंत्र बोला जाता है-

"यनि कानिक च पापानि,
जन्मान्तर कृतानि च।
तानी तानी विनयशन्ति,
प्रदक्षिणा पदे-पदे ।।"

प्राण प्रतिष्ठित ईश्वरीय प्रतिमा की, पवित्र वृक्ष की, यज्ञ या हवन कुंड की परिक्रमा की जाती है। जिससे उसकी सकारात्मक शक्ति हमारी तरफ आकृष्ट होती है। सूर्य को देखकर हम अपने इर्द-गिर्द घूम लेते हैं, क्योंकि -

1. हर गोल घूमने वाली वस्तु के घूमने से **आकर्षण शक्ति** उत्पन्न होती है।
2. इस **ब्रह्मांड में सभी ग्रह सूर्य की प्रदक्षिणा कर रहे हैं** जिससे उनमें आकर्षण शक्ति उत्पन्न होती है।
3. पृथ्वी और सभी ग्रह अपने इर्द-गिर्द ही प्रदक्षिणा कर रहे हैं। **(परिभ्रमण/घूर्णन)**
4. जब हम अपने हाथ में पानी की बाल्टी का पानी लेकर गोल-गोल घूमते हैं तो बाल्टी का पानी गिरता नहीं है। इसी तरह पृथ्वी घूम रही है तो उस पर स्थित भी जड़ पदार्थ गिरते नहीं है। **(अभिकेन्द्र बल - अप केन्द्र बल)**
5. हर **अणु में भी इलेक्ट्रॉन प्रदक्षिणा** कर रहे हैं।
6. छाछ से मक्खन निकालते समय भी उसे गोल-गोल घुमाने से उसमें ब्रह्माण्ड में मौजूद शक्ति आकर्षित होती है। **(अभिकेन्द्र -उपकेन्द्र)**

इस शक्ति को अनुभव करने के लिए हमें गेंद को हाथ में पकड़ कर, हाथों को कंधों तक उठाकर उन्हें घुमाएं जैसे डमरू बजा रहे हो। थोड़ी ही देर में अंगुलियों में भारीपन महसूस होगा।

यही **ब्रह्नाण्ड से आकर्षित शक्ति का अनुभव है अब हल्की सी ताली बजाकर इसे अपने अन्दर समाहित कर लें।**

नमस्कार शब्द **नमः+कार** दो शब्दों से मिलकर बना है। नमस्कार का आशय है हम संसार के कारक को हमेशा सादर नमन करते हैं क्योंकि हमारी निज कोई सता नहीं है जो कुछ भी इस संसार में है वह इस संसार के कर्ता नियंता का है। अतः हमारा दूसरे व्यक्ति से जो मिलन हुआ है वह उस परमसत्ता की कृपा से हुआ है जो अवश्य ही शुभ और मंगलमय होगा।

नमस्कार, नमस्ते का अर्थ है उस परमात्मा को नमस्कार करना कहीं कहीं परंपरा स्वरूप हाथ मिलाकर, गले मिलकर या अभिवादन किया जाता है। ये सभी क्रियाएं नमस्कार का मौन स्वरूप है। दो व्यक्तियों का हाथ से हाथ, दिल से दिल, हृदय से हृनदय मुख से मुख मिलते हैं तो भी **परम सत्ता की दो विभूतियों को एकाकार हो जाना ही नमस्कार की उच्च श्रेणी बन जाता है।** नमस्कार के पीछे वैज्ञानिक कारण यही रहा है कि व्यक्ति निजत्व को त्यागकर सार्वभौम सत्ता को स्वीकार करता है व्यष्टि से समष्टि में मिल जाता है। आत्मा से परमात्मा, अणु से परमाणु और इस प्रकार वह अपनी विराट सत्ता बना लेता है। उसका अहम समाप्त हो जाता है। नमस्कार करते ही उसमें विनम्रता, निर्मलता, सहृनदयता मैत्री भाव और अपनत्व का भाव व्याप्त हो जाता है। मनोवैज्ञानिक या वैज्ञानिक स्तर पर देखें तो दोनों में सकारात्मक ऊर्जा का संचार दोनों नमस्कार करने वाले में हो जाता है। कई बार हम देखते हैं कि कोई व्यक्ति हमसे रूष्ट होता है। जब हम स्वयं पहल करके नमस्कार करते हैं तो हमारे प्रति वह सद्व्यवहार करता है।

यह इस बात का प्रमाण है कि नमस्कार से सकारात्मक ऊर्जा का संचार होता है। यह जरूर ध्यान रखे कि नमस्कार छोटे-बड़े सभी को किया जा सकता है, जबकि प्रणाम हमेशा अपने से बड़ों से किया जाता है। नमस्कार के पीछे एक वैज्ञानिक कारण यह भी है कि जब हम नमस्कार करते हैं तो हमारे हाथों की हथेलियाँ आपस में जुड़ती हैं जिससे अंगुलियों के माध्यम से एक दबाव पैदा होता है जो हमारी याददाश्त को मजबूत बनाने में सहायक है।

... क्रमशः अगले माह

- डॉ. दिनेश कुमार गुप्ता जी, गंगापुर सिटी, (राज.)

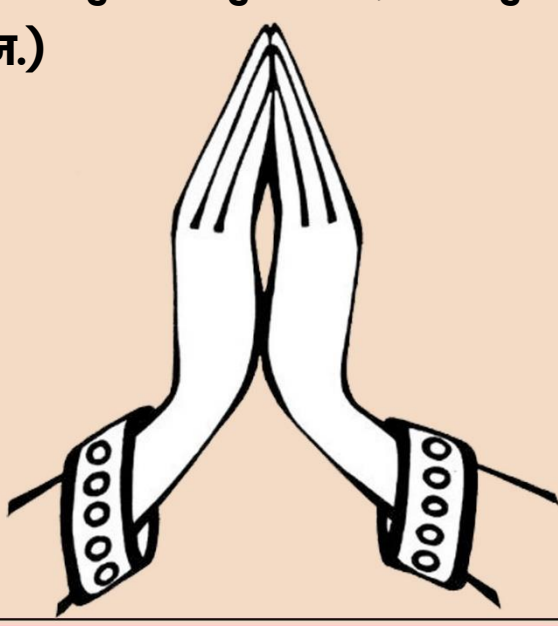

अगर आप अपने

‘शब्दों के मोती’

भारतीय परम्परा की माला में पिरोना

चाहते है तो हमे सम्पर्क करें!

आपका लेख वेबसाइट पर भी प्रकाशित किया जायेगा

paramparabhartiya@gmail.com

भगवान शिव की आराधना का पर्व

भारत की संस्कृति धर्म परायण है, धर्म परायण होने के कारण भारतीय संस्कृति में व्रत का अपना एक विशेष महत्व है। महाशिवरात्रि एक प्रमुख धार्मिक पर्व उत्सव एवं व्रत है। शैव धर्मलिम्बी महाशिवरात्रि को बड़ी श्रद्धा तथा उत्साह से मनाते हैं। महाशिवरात्रि का पर्व भारत के साथ-साथ नेपाल तथा बांग्लादेश में भी मनाया जाता है। **साल में 12 शिवरात्रि होती है प्रत्येक मास कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को शिवरात्रि कहा जाता है लेकिन फागुन मास की कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी को महाशिवरात्रि कहा जाता है।**

क्यों मनाई जाती है महाशिवरात्रि?

मान्यताएं –

1) पौराणिक एवं धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन सृष्टि का प्रारंभ अग्नि लिंग से हुआ था। **(महादेव का विशालकाय स्वरूप)**

2) **भगवान शंकर एवं पार्वती जी का विवाह इसी दिन हुआ था।**

3) भगवान शिव जिनसे योग परंपरा की शुरुआत मानी जाती है, **शिव को योग का प्रथम गुरु माना जाता है** परंपरा अनुसार इस दिन रात्रि को ग्रहों की स्थिति ऐसी होती है कि मानव में ऊर्जा तथा शक्ति की प्राकृतिक लहर बनती है।

4) शिवरात्रि के दिन ही रात्रि में शिव के निराकार रूप से साकार रूप हुआ था ब्रह्मा जी के रूप में।

कथा –

महाशिवरात्रि के बारे में कई कथाएं प्रचलित है, धार्मिक एवं पौराणिक मान्यताओं के अनुसार समुद्र मंथन के समय अमृत कलश निकलने से पहले हलाहल नाम का विष निकला, हलाहल विष के निकलते ही संपूर्ण ब्रह्मांड में हाहाकार मच गया, त्राहि-त्राहि होने लगी समुद्र में ऊंची ऊंची लहरें उठने लगी। हलाहल विष में ब्रह्मांड को समाप्त करने की क्षमता थी और भगवान शिव ही इसे नष्ट कर सकते थे अतः भगवान शिव से प्रार्थना की गई भगवान शिव ने हलाहल विष पान किया तथा उसे अपने कंठ में रख लिया कंठ में रखने के कारण उनका कंठ नीला पड़ गए इसलिए भगवान शिव को **"नीलकंठ"** भी कहते हैं। हलाहल विष को कंठ में रखने के कारण उनको भयंकर कष्ट हुआ। वैद्य तथा चिकित्सक

बुलाए गए चिकित्सकों ने सलाह दी भगवान शिव को रात में सोने न दिया जाए। शिवजी रात में सोने ना पाए इसलिए रात भर उत्सव मनाया गया नृत्य तथा गान हुए प्रातः भगवान शिव ने सब को वरदान दिया। इसी उत्सव की स्मृति में यह पर्व मनाया जाता है। भगवान शंकर ने सृष्टि को बचाया था तो उनके भक्त गण व्रत रखते हैं तथा रात जागरण करते हैं।

पूजन विधि -

- महाशिवरात्रि को प्रातः काल स्नान करके पूजन कार्य करें पूजन करने से पहले त्रिपुंड तिलक लगाएं पूजन के साथ व्रत भी करें यदि संभव हो तो निर्जल व्रत रखें।
- भगवान शंकर पर रोली अक्षत चंदन इत्र बेलपत्र धतूरा तथा साथ में मंदार के श्वेत पुष्प भी अर्पण करें।
- पूजन करते समय ईशान कोण की तरफ मुंह करें।
- जो बेलपत्र अर्पण करें उस बेलपत्र पर ओम नमः शिवाय लाल चंदन से लिखकर चढ़ाएं तो विशेष फलदायक होता है।
- भगवान शिव का पूजन करने से पहले भगवान गणेश का तथा शिव परिवार का पूजन करें तत्पश्चात शिवजी का पूजन करें।
- महामृत्युंजय मंत्र का जाप करें, यह मंत्र कष्ट निवारक होता है यदि संभव हो तो मंत्र छपवा कर वितरण करें।
- अपने द्वार पर महामृत्युंजय मंत्र कांच में मड़वा कर स्थापित करें।
- शहद दूध दही शक्कर तथा इत्र से अभिषेक करें।
- सौभाग्यवती महिलाएं सुहाग सामग्री मां पार्वती को अर्पण करें।
- कुंवारी कन्याएं दूध में केसर तथा शक्कर डालकर मीठा दूध भगवान शंकर पर चढ़ाएं।
- अविवाहित पुरुष सफेद तथा पीली फूलों की माला चढ़ाएं ऐसा करने से शादी में आने वाली रुकावटें समाप्त हो जाती हैं।

क्यों होता है इन वस्तुओं से अभिषेक?

शहद : मां लक्ष्मी की कृपा होती है तथा वाणी में मिठास आती है।

दूध : स्वास्थ्य रक्षा एवं संतान प्राप्ति हेतु।

दही : जो पशु पालन का व्यवसाय करते हैं पशुओं की संख्या और अधिक बढ़े।

घी : बल तथा उर्जा की प्राप्त हेतु।

इत्र : विचार पवित्र हो।

शक्कर : सुख समृद्धि में वृद्धि हो।

विभिन्न राशियों वाले व्यक्तियों को अपनी राशि के अनुसार सामग्री प्रयोग कर अभिषेक करना चाहिए -

मेष - शक्कर तथा शहद से अभिषेक करें

वृष - गाय के दूध से अभिषेक करें।

कर्क - मंदार का फूल तथा दूब को पीसकर उससे अभिषेक करें

सिंह - पंचामृत से अभिषेक करें

तुला - दूध तथा गन्ने के रस से अभिषेक करें।
धनु - गन्ने के रस से अभिषेक करें
मकर - गुड़ तथा तथा गन्ने के रस से अभिषेक करें
मिथुन - शहद से अभिषेक करें
कन्या - गुड़ तथा घी से अभिषेक करें
मीन - मंदार की जड़ तथा दूब को पीसकर उससे अभिषेक करें
कुम्भ - जल में गुलाब की पंखुड़ी या इत्र डालकर उससे अभिषेक करें
वृश्चिक - शहद तथा घी मिलाकर उससे अभिषेक करें, अभिषेक करने के उपरांत भगवान से प्रार्थना करें घी का दीपक जलाएं।

शिवरात्रि महिलाओं के लिए विशेष शुभ मानी जाती है अपने पति के स्वास्थ्य तथा सुख के लिए पत्नी भगवान शिव से प्रार्थना करती है। कन्याएं भगवान शिव जैसा आदर्श पति प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करती हैं।

सोमवार को भगवान शिव का प्रतीक माना जाता है अतः सोमवार के दिन भगवान शिवजी का व्रत कथा पूजा होती है। **बांग्लादेश में लोग चंद्र नाथ धाम** पूजा करने जाते हैं। **नेपाल में भगवान पशुपतिनाथ जी** के मंदिर में बहुत बड़ा उत्सव मनाया जाता है, मान्यता के अनुसार शंकर पार्वती का विवाह शिवरात्रि को हुआ था, इसलिए **रात्रि में शिव की बारात भी निकाली जाती है।**

महाशिवरात्रि को **"बोध उत्सव"** भी कहते हैं जिसका अर्थ यह है इस बात का बोध होता है कि हम सब शिव के अंश हैं तथा उनके संरक्षण में हैं। मध्य भारत प्रांत में शैव अनुयायो की बड़ी संख्या है। उज्जैन में महाकाल मंदिर सिवनी के मठ जबलपुर का तिलवारा घाट मैं महाशिवरात्रि के उत्सव दर्शनी हैं दक्षिण भारत में भी आंध्र प्रदेश कर्नाटक केरल तमिलनाडु तेलंगाना के मंदिरों में भी महाशिवरात्रि के उत्सव तथा पूजन होते हैं। कश्मीरी ब्राह्मणों के लिए यह व्रत महत्वपूर्ण है वहां यह व्रत तीन-चार दिन पहले शुरू होता है तथा 2 दिन बाद तक चलता रहता है।

ये अवश्य करें - यदि घर में भगवान शिव की प्रतिमा हो तो दूध से उसका अभिषेक करें और यदि प्रतिमा ना हो तो किसी मंदिर से अभिषेक का दूध लाकर संपूर्ण घर की दीवारों पर तथा संपूर्ण घर में छींटे मारे ऐसा करने से घर से नकारात्मक शक्तियों का विलोप होता है तथा सकारात्मक शक्तियों का प्रवेश होता है।
ऊँ नमः शिवाय

- श्रीमती उषा चतुर्वेदी जी, भोपाल (म.प्र.)

"यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता" नारी शक्ति के आगे देवता भी नतमस्तक हुए है। शक्ति स्वरूपा माँ दुर्गा, ज्ञान बरसाती माँ सरस्वती, धन-धान्य की समृद्धि देती माँ लक्ष्मी, और भंडार को भरा पूरा रखती माँ अन्नपूर्णा। जीवनावश्यक सभी जरूरतों का साम्राज्य नारी के हाथो हैं।

नारी केवल भोग की वस्तु नहीं हैं। वह उत्तम योग की स्थली है जो गृहिणी बन संचालन करती है। हमारा घर ही साधना स्थली होता है जहां माताओं की गोद में राम, कृष्ण, गौतम, कपिल, शिवा, प्रताप जैसे अनेक सितारों के शील को माताओं ने संस्कारों से निखारा है इस बात का इतिहास भी गवां है।

मातृ देवो भव कह कर मातृशक्ति को गुरु और पिता से पूर्व स्थान दिया जाता है क्योंकि नारियों का त्याग और समर्पण भाव देखा जाए तो वाकई में वह पूजनीय है। अबला तेरी यही कहानी आँचल में दूध आंखों में पानी... यह बातें अब अतीत बन चुकी है। आज की नारी के लिए कहना होगा...**"सबला तुम्हारी यही पहचान आंखों में सपने.. और आंचल में ज्ञान।"**

वर्तमान दौर में नारियों के चूड़ियों की खनक और पायल की झंकार अंतरिक्ष तक जा पहुंची हैं। आज हर क्षेत्र में अपने उपस्थिति की रुनझुन मौजूद कर नारियों ने बड़ी कुशलता से अपनी बुद्धिमत्ता का परचम लहराया हैं जिसके आगे दुनिया नतमस्तक हैं। जिस तरह शरीर में रीढ़ की हड्डी का स्थान महत्वपूर्ण होता है उसी प्रकार परिवार, समाज और देश कल्याण में नारी की अहम भूमिका है अपने आप में नारी का व्यक्तित्व महत्वपूर्ण है फिर क्यों वह व्यर्थ नर से बराबरी करने की होड में लगी है...।

शरीर संरचना और कार्यकुशलता के आधार पर नारी के हिस्से अधिक जिम्मेदारियां आती है ईश्वर ने यह कार्य का विभाजन नारी की बुद्धिमत्ता को ध्यान में रखकर, उसकी निपुणता के आधार पर ही किया है इसलिए नर नारी समानता की होड़ में ना उलझे तो बेहतर होगा। नारियों को अपने हित और कल्याण के लिए लक्ष्य निर्धारित करने होंगे। सफलता के सुमनों को खिलने के लिए सुविधाओं का बाग जरूरी नहीं वह तो मेहनत की मरुस्थली में भी खिल सकता हैं।

हर नारी को अपने भीतर स्थित कला को संवारना होगा और अपनी स्वतंत्र पहचान बनाने के साथ ही अपने अस्तित्व को नया आयाम देना होगा जिस से उसके भीतर आत्म संतुष्टि की भावना देदीप्यमान होगी।

माँ की गोद में हंसता खेलता शिशु विश्व की सर्वोत्कृष्ट कलाकृती हैं। नारी पत्नी के रूप में पति का हृदय तत्व उसकी प्राण शक्ति हैं, भाई की चेतना शक्ति, माता के रूप में पुरुष की निर्माण शक्ति हैं जो हाथ पलना झूलाता है। वह विश्व पर शासन करने का सामर्थ्य भी रख सकता हैं तो फिर कहा परवरिश में कमी आ रही है, जो आज सम्पूर्ण देश में बलात्कार की घटनाएं हो रही हैं उसे कोई शिक्षा व्यवस्था, ना ही कानून व्यवस्था रोक पा रही हैं। यह अत्यंत निंदनीय है क्या अब माताएं अपने बच्चों को संस्कारों से वंचित रख रही है, कहीं तो कोई कमी आ रहीं है जो युवा ऐसे शर्मसार कृत्य कर माताओं की कोख को लज्जित कर रहे हैं, ऐसी घटनाएं पीड़िता के साथ ही मातृशक्ति को भी अपमानित करती है।

अब बहनों को लक्ष्य साधना होगा, वह अपने संतति को सुयोग्य राह पर चलाने के लिए प्रेरक बने, उन्हें संस्कारों से सींचे। नारी के सम्मान का बीजारोपण बचपन से ही सिंचित करें एवं समाज, राष्ट्र को एक अच्छा नागरिक सौंपने का कार्य करे, यहीं सर्वोत्तम राष्ट्र सेवा होगी और यहीं सच्ची ईश्वर भक्ति होगी।

हमारा घर आंगन किसी बड़े देवालय से कमतर नहीं... यह अत्यंत पवित्र हैं, यहां गुनाह के पौधे पनपने ना पाए यह ध्यान मातृशक्ति को रखना होगा।

"धरा पर साक्षात प्रेम का अवतार हूं
तपती गर्मी में शीतल पवन का झोंका हूं
कांटों भरी राह में फूलों का अहसास हूं
नीत सरिता सी बहती हूं, हां मैं नारी हूं।"

- राजश्री राठी जी, अकोला (महाराष्ट्र)

अब किसपे जाये ध्यान ?
तुम्हें देखने के बाद ।
रुक गई उड़ान, तुम्हें देखने के बाद ।
अब आरजू तो किसी की नहीं रही,
किस काम का जहान,
तुम्हें देखने के बाद ।
धरती पे सारे चाँद सितारे बिखर गये,
क्या देखूँ आसमान,
तुम्हें देखने के बाद ।
दोनों जहाँ में ऐसा कोई दूसरा नहीं,
सच्चा है ये बयान,
तुम्हें देखने के बाद ।
हे प्रभु! सूरज भी तुम हो,
चाँद भी, तारा भी, फूल भी तुम हो,
क्या-क्या मिला है ज्ञान,
तुम्हें देखने के बाद ।

- डॉ. महेश प्रसाद सिंघल जी, खरगोन / मुंबई

WHITE BERRY
RESIDENCY
FIND YOUR
DREAM
HOUSE
READY TO MOVE
OC RECEIVED
1, 2 BHK & JODI FLATS
INDOOR GAMES
GYM & YOGAROOM
TERRACE AMENITIES
BOOK NOW
98705 80810, 85913 69996
ASHA NAGAR, THAKUR COMPLEX, KANDIVALI (E), MUMBAI

Shree Ganeshay Namah
GAATHBANDHAN
Kings weds Queens
Kings weds Queens
PAPER LESS
&
SHIPPING
FREE
WEDDING
INVITATION
CALL US
www.kingswedsqueens.com

गुमनाम मजदूर

शहर की बड़ी-बड़ी इमारतें,
चमचमाते आलीशान घर,
अंतहीन हजारों सड़कें,
और भी न जाने क्या-क्या ?
उसने, अपने हाथों से गढ़े हैं।
एक-एक ईंट-पत्थर,
उसके स्पर्श को बेहतरी से जानता है।
अपने हाथों, तराशकर उसने,
दुनिया को दिये है-अनगिनत अजूबे।
अपने पसीने से वह,
मिट्टी के कई रूप लिख चुका है।
सारे महानतम बूत,
उसके हाथों तराशे गये हैं।
राजपथ, चौराहे, राजमहल, और तो और,
देश को चलाने वाली संसद तक,
उसकी, मेहनत का परिणाम है।
पसीना बहाने के लिए,
वह, हर जगह मौजूद है; लेकिन...
किसी गली, सड़क या चौराहे पर,
उसके नाम का कोई
बूत या इमारत नहीं है।
कोई राजमार्ग,
उसके नाम से नहीं गुजरता; फिर भी...,
वह चुपचाप कहीं,
कोई महान पत्थर गढ़ रहा होता है।

- अनिल कुमार केसरी जी, ग्राम - देई, जिला - बूंदी (राज.)

चल बसंत को साथ करें

सघन उदासी के जंगल को, पीछे छोड़ दिया।
जलना-कटना जो होता था, पीछे छोड़ दिया॥

याद करें भी उस बचपन को, जो अबोध सा था।
चाँद के जैसा था चमकीला, या चकोर सा था।

चल जी लें फिर वह बचपन, पीछे छोड़ दिया।
वय का वह मीठा सा टुकड़ा, पीछे छोड़ दिया॥

ऊँचा अम्बर गहरी घाटी, उन्मुख आगे हैं।
तितली जैसे सुंदर सपने, सम्मुख जागे हैं।
चिंता का इक पर्वत भारी, पीछे छोड़ दिया।
जीने-मरने की शपथों को, पीछे छोड़ दिया।

बादल वाले नभ से सुखदा, चाहत ही कर लें।
स्वर्ण सुंदरी धूप उतरती, स्वागत ही कर लें।
सोने सा ये दिन बटोर फिर, पीछे छोड़ दिया।

चल बसंत को साथ करें भी, पीछे छोड़ दिया॥

- त्रिलोकी मोहन पुरोहित जी, कांकरोली, राजसमंद (राज.)

रंगों की बौछार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

फूलों - से खिल जाते मुखड़े। आपस में मिल जाते बिछड़े।
उर में उमड़ा प्यार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

मैले दिल हो जाते उजले। मौसम जब भी गाता ग़ज़लें।
ग़ज़लों का फ़नकार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

कोयल - सी हो जाती बोली। रंगों की जब आती होली।
प्यारा - सा मनुहार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

सर्र - सर्र सरके सर से आंचल। रंगों के अब उड़ते बादल।
पायल की झंकार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

फूलों के अब बिछे बिछौने। दरबानों - से खड़े बगीचे।
महका बंदनवार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

मुझको आती हरदम हिचकी। ओढ़ विरह की चादर सिसकी।
सूना मन का द्वार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

भौंरें करते गुन - गुन गुंजन। सांसों में अब महके चंदन।
सपनों का संसार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

मौसम ने मल - मलकर हल्दी। कुंवारी देह सुहागन कर दी।
होंठों को रुख़सार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

अधरों पर हैं छंद पलाशी। तन-मन आज हुआ मधुमासी।
गीतों की रसधार है फागुन। खुशियों का त्यौहार है फागुन।

- अशोक 'आनन' जी, मक्सी, शाजापुर (म.प्र.)

दैवीय रूप नारी

जो प्रेमशक्ति की मायावी, जाया बनकर उतरी जग में।
आह्लाद बढ़ाती हुई बढ़ी, बनकर छाया छतरी मग में॥

बलिदान त्याग की महामूर्ति, ममता की सागर धैर्यव्रता
करूणाकरिणी दैवीय दीप्ति, साहस की जननी शान्ति सुता

हे विनयशालिनी युगमुग्धा, भू भुवनमोहिनी प्रियंवदा
रागानुरागिणी कनक काय, परपोषी तोषी अलंवदा

नारी के मन की कोमलता, कमनीय देह के आकर्षण
मधुरिम सुर नयनों के कटाक्ष, लज्जा के मृदु हर्षण - वर्षण

उद्दाम - काम उन्मत्त - प्रेम, दुर्दम्य ललक का विकट जाल
उस पर प्रजनन का दिव्य कोष, पौरूष को कर देता निढाल

इस तन का मादा रूप देख, दुनिया ने औरत नाम दिया
नर ने भी जीवन शक्ति समझ , अर्द्धांग मान कर थाम लिया॥

नारी के गुण ही नारी को, दुर्बल या सबल बनाते हैं
इनके कारण ही नर-नारी, दोनों सम्बल बन जाते हैं

नारी के गुण के कारण ही, नर नरपिशाच बन जाता है
नारी के गुण के कारण ही, नर नारिदास बन जाता है

नारी के गुण के कारण ही, रण भीषण हुए जमाने में
नारी के गुण के कारण ही, टल गये युद्ध अनजाने में

नारी नर की है प्राण शक्ति, दोनों की प्रेम पगी डोरी
नारी नर की है शक्ति भक्ति, नारी ही नर की कमजोरी

दोनों दोनों के हैं पूरक, दोनों दोनों के हितकारी
कोई भी छोटा बड़ा नहीं, नारी भारी नर भी भारी

- गिरेन्द्रसिंह भदौरिया जी, "प्राण" इन्दौर

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका
नियमित प्राप्त करने हेतु हमें
सम्पर्क करें!

- व्हाट्सप्प और टेलीग्राम पर से हर महीने के शुरू में नया अंक प्रेषित किया जाता है। यदि किसी कारणवश आपको नया अंक नहीं मिला हो तो कृपया हमें सूचित करें।

- भारतीय परम्परा ई-पत्रिका के लिए दिए गए नंबर **7303021123** को मोबाइल में सेव करें और व्हाट्सप्प एवं टेलीग्राम के ग्रुप से जुड़े।

- ई-पत्रिका में जहाँ कहीं भी सोशल मीडिया के आइकॉन बने हुए है उन्हें स्पर्श करने पर आप उस लिंक पर इंटरनेट के माध्यम से पहुँच सकते है।

- ई-पत्रिका में कुछ त्रुटियाँ हो तो हमें जरूर बताये और आपको पत्रिका पसंद आये तो अपने परिवारजनों और मित्रों के साथ शेयर करें।

- **भारतीय परंपराओं** को संजोये रखने एवं ई-पत्रिका को सुरुचिपूर्ण बनाने के लिए आपके सुझावों और विचारों से अवगत जरूर कराये।

275. श्रीकृष्ण ने युधिष्ठिर के इस प्रस्ताव पर क्या कहा...?

- धर्मराज के कारण हम लोगों पर पुन: भय आ गया है। एकांकी हारजीत से युद्ध के परिणाम की शर्त लगा कर इन्होंने इस भयंकर युद्ध को जुए का दांव बना डाला है, यह इनकी बड़ी भारी मुर्खता है।

276 श्रीकृष्ण ने ऐसा क्यों कहां...?

- गदा-युद्ध में भीमसेन के अलावा किसी दूसरे पाण्डव का, दुर्योधन को जीत पाना असम्भव था। भीम के साथ गदायुद्ध की चाह में दुर्योधन ने वर्षों तक कठिन अभ्यास किया। दुर्योधन का शारीरिक बल भी भीम के समकक्ष था अर्थात अन्य पाण्डवों की बात तो क्या, भीम के साथ युद्ध में भी दुर्योधन का पलड़ा भारी प्रतीत हो रहा था।

277. इस अवसर पर श्रीकृष्ण ने शुक्रनीति का कौनसा श्लोक सुनाया...?

- कि युद्ध में प्राण बचाने के लिए भागा हुआ शत्रु यदि युद्ध के लिये लौट आये तो उससे डरते रहना चाहिये क्योंकि एक निश्चय पर पहुंचे हुए ऐसे व्यक्ति, जीवन की आशा छोड़ साहस पूर्वक युद्ध में कूद पड़ते है।

278. दुर्योधन ने किसके साथ और कैसे युद्ध किया...?

- युधिष्ठिर द्वारा उसे, अपना आयुध व किसी एक पाण्डव को अपना प्रतिद्वंधी प्रतिद्वंद्वी चुन लेने का अवसर देने पर दुर्योधन ने अपने पसंदीदा आयुध, गदा के साथ भीम को ललकारा।

279. दुर्योधन व भीम का गदायुद्ध शुरू होने से पहले किस महापुरुष का आगमन हुआ...?

- श्री बलराज जी का आगमन हुआ । युद्ध में किसी भी पक्ष का आमंत्रण स्वीकार न करके बलराम जी तीर्थयात्रा को निकल गये थे। ज्ञात रहे कि दुर्योधन व भीम दोनों ही गदायुद्ध कला में बलराम जी के शिष्य थे।

280. दुर्योधन व भीम का गदायुद्ध कहां पर हुआ...?

- महाभारत का युद्ध कुरुक्षेत्र में लड़ा गया लेकिन दुर्योधन व भीम का गदायुद्ध श्रीबलराम की सलाह पर पवित्र व सनातन तीर्थस्थल "समन्तपंचक" में लड़ा गया ।

281. समन्तपंचक तीर्थस्थल कहां है...?

- यह कुरुक्षेत्र से पश्चिम की ओर सरस्वती नदी के दक्षिण किनारे पर स्थित था। यह

माना जाता है कि भगवान परशुराम ने क्षत्रियों का संहार करके यहां पर उनके रक्त से पांच सरोवर बना दिये थे। पितरों द्वारा क्षत्रियों का संहार बन्द करने का अनुरोध स्वीकार कर लेने पर पितरों ने परशुराम जी से वर मांगने को कहा। तब परशुराम जी ने मांगा कि यह स्थल एक पावनस्थल के रूप में प्रसिद्ध हो जाये।

282. भीम और दुर्योधन के गदायुद्ध का क्या परिणाम रहा...?

- बल व विद्या में एक समान होने के कारण उनके बीच भयंकर युद्ध होने लगा। लहूलुहान दोनों योद्धा एक दूसरे पर बढ़ चढकर वार करने लगे। उनकी गदाओं के टकराने से भयकंर ध्वनि-प्रतिध्वनि हो रही थी। युद्ध के दौरान अर्जुन, भीम की ओर देखते हुए अपनी बायीं जंघा को ठोकने लगे। भीमसेन ने संकेत को समझ लिया और मौका मिलते ही दुर्योधन की जांघों पर बड़े वेग से गदा का प्रहार कर उसकी दोनों जांघें तोड़ डाली।

283. भीमसेन ने दुर्योधन की जांघें क्यों तोड़ी...?

- चीरहरण के समय दुर्योधन ने द्रौपदी को अपनी जांघ पर बैठने का निर्लज्ज इशारा कर पांडु कुलवधू और पाण्डवों का अपमान किया था। उस समय क्रोधित भीम ने अपमान का बदला लेने के लिये युद्ध में दुर्योधन की जांघें तोड़ने की प्रतिज्ञा की थी।

एक बार महर्षि मैत्रेय शान्ति की सलाह देने हस्तिनापुर पधारे, अपने अहंकार में डूबे दुर्योधन ने उनकी सलाह को अनसुनी करने के साथ-साथ उन्हें अपनी जांघ भी दिखायी। इस अपमान से क्रोधित हो महर्षि मैत्रेय ने दुर्योधन को श्राप दिया कि युद्ध में भीम अपनी गदा से तेरी जांघें तोड़ डालेगा।

284. दुर्योधन की जांघें टूट जाने से कौन क्रोधित हुए...?

- श्रीकृष्ण के बड़े भाई बलराम क्रोधित हुए।

285. बलराम जी को क्रोध क्यों आया...?

- कि गदायुद्ध के नियम के अनुसार नाभि से नीचे प्रहार नहीं किया जा सकता। नियमों का उल्लंघन होने के कारण बलराम जी भीमसेन पर क्रोधित हुए।

286. बलराम जी को किसने, कैसे समझाया ...?

- नियमों का उल्लंघन देख बलराम जी भीमसेन पर वार करने को दौड़े तो श्रीकृष्ण ने रोक लिया। कौरवों के द्वारा पाण्डवों पर किये गये अत्याचारों व अधर्म पूर्वक आचरणों का हवाला देते हुए और प्रतिज्ञा पालन को क्षत्रियों का धर्म बतलाते हुए श्रीकृष्ण द्वारा बलराम को शान्त किया गया।

(क्रमश:अगले माह)

- माणक चन्द सुथार जी, बीकानेर (राज.)

एक बार की बात है एक घर में आग लग गई। घर में से सभी लोगों को निकाला गया मोहल्ले के कुछ लोग आग बुझाने में लग गए तो कुछ लोग सिर्फ देख रहे थे।

उसी घर में एक चिड़िया का घोंसला भी था। चिड़िया अपनी चोंच में थोड़ा पानी लाती और आग के ऊपर डाल देती लेकिन आग बुझ ही नही रही थी और चिड़िया भी रुकने का नाम नहीं ले रही थी वो बस अपनी चोंच में पानी भर कर लाती और आग में डाल देती। चिड़िया को बार बार मेहनत करते देख कौवा उसको देख कर हंसने लगा और बोला चिड़िया तू पागल है क्या ?

तुझे क्या लगता है, ये घर देख इतना बड़ा है और तेरी चोंच इतनी छोटी है...
तुझे क्या लगता है तेरे बुझाने से ये आग बुझ जायेगी?
चिड़िया ने कहा हां मैं जानती हूं कि मेरे बुझाने से ये आग नही बुझेगी लेकिन जब
चिड़िया ने कहा हां मैं जानती हूं कि मेरे बुझाने से ये आग नही बुझेगी लेकिन जब
भी इस आग के बारे में बात होगी तब **मेरा नाम आग बुझाने वालों में होगा ना कि तमाशा देखने वालो में होगा।**

ठंडी ठंडी पुरवई और सूरज की लाली लिये सीरत
जाने कितना इश्क़ फ़रमाती हमसे ये कुदरत
पत्तों की सरसराहट और पक्षियों के कलरव का मधुर संगीत
मन को सुकून है देती, निसर्ग की मनमोहक प्रीत
झील का किनारा और बसंत की बहार
रंग-बिरंगें फूल और ओस की बूँदों की हल्की सी फुहार
शांत पानी और ऊँचे ऊँचे पहाड़
प्रकृति की सुंदरता रहती सदाबहार
हरियाली भरी वादियाँ और झरनों की खलखल
ख़त्म कर देती मन की हर हलचल
चंद्रमा की चाँदनी और सितारों की चादर
बिना बात छलक आये आँखों का सागर
दिमाग़ के सौ तर्क कुदरत के एक ही बहाने से हार जाते हैं
आप ख़ुद से तब मिलते हैं जब प्रकृति को क़रीब से देखते हैं

- नेहा रांका जी, मुंबई (महाराष्ट्र)

किसी ने घड़े से पूछा कि तुम इतने ठंडे क्यों हो?
घड़े का उत्तर था, जिसका अतीत भी मिट्टी और भविष्य भी मिट्टी तो उसे किस बात पर गर्मी होगी।

कभी खुशहाल, कभी उदास,
कभी जीत तो कभी हार होगी,
यह जिंदगी की सड़क है,
धीरे-धीरे पार हो ही जाएगी।

जीवन में निरंतर नेक कार्य करते रहें. कोई आपका सम्मान करे या न करे, आपकी अंतरात्मा सदा आपको सम्मानित करेगी।

अच्छे व्यक्ति के साथ संबंध उस गन्ने के समान जिसे आप तोड़ो-मरोड़ो-काटो आपको उससे मीठा रस ही मिलेगा।

जो हो रहा है उसे होने दो,
तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारी सोच से भी बेहतर तुम्हारे लिए सोच रखा है...!

सम्मान हमारे व्यक्तित्व का सबसे अहम् अंश है,
यह एक निवेश की तरह है,
जितना हम दूसरों को देते हैं वो हमें ब्याज सहित वापस मिलता है।

एक बार एक गांव में एक लड़का रहता था जो की हमेशा सपने देखता था लेकिन जब वो अपने सपनों के बारें में दूसरों को बताता तो सब उसका मज़ाक उड़ाते और उसको समझने वाला कोई नहीं था।

सब उससे यही कहते की ये तुम्हारे सपने पूरे नही हो सकते क्योंकि तुम एक छोटे से गांव में रहते हो।

उस लड़के को ये सुनकर बहुत ही ज़्यादा गुस्सा आता था कि **क्या हमारे गांव में कोई भी इतना काबिल नहीं है जो हमारे गांव का नाम रौशन का सके... ? और हमेशा सोचता था कि अगर आज तक किसी ने हमारे गांव में सपने नही देखे और सफलता नहीं पाई तो कोई बात नहीं, मैं अपने गांव का नाम रौशन ज़रूर करूंगा।**

लड़के के एक दोस्त ने उसको सुझाव दिया कि हमारे गांव से कुछ दूरी में ही एक पुस्तकालय है जहां जाकर उसको अपने सपनों के लिए कोई दिशा मिल सके या और भी कई बातों की जानकारी मिल जाएगी जो वो जानना चाहता है।

उस लड़के ने अगले ही दिन पुस्तकालय जाकर देखा तो वहाँ पर अनगिनत किताबें थी और तो और वहाँ एक दम शांति और हर कोई बस किताबें ही पढ़ रहा था। वो लड़का बहुत खुश हुआ जैसे मानो उसके मन की मुराद पूर्ण हो आगयी हो। अब वो हर रोज़ वहाँ जाता और किताबें पढ़ता, जिससे उसके लिए अब कुछ भी करना मुश्किल नही था।

एक दिन पुस्तकालय से लौटते वक्त उसने गांव के कुछ बच्चों को देखा जो की उसको देखकर बहुत खुश हो रहे थे लड़के ने बच्चों से पूछा तुम लोग आखिर इतना खुश क्यों हो..? तब उनमें से एक बच्चा बोला की भईया आप किताबें पढ़ने और अपने सपने को पूरे करने के लिए इतना दूर जाते हो और आप थकते भी नही... ?

आप देखना जब हम बड़े हो जायेंगे तो हम भी अपने सपने पूरे करने के लिए उस अनोखी जगह जाएंगे जहां से आपने इतना ज्ञान पाया है अब आपको सफलता मिल कर ही रहेगी। वह लड़का हंसकर बोला सही कहा तुमने मैं अपना सपना ज़रूर पूरा

करूंगा, लेकिन क्या तुम्हे पता भी है की सपना क्या है?? बच्चों ने कहा नही हमें नही पता तब लड़के ने बताया **"मैं अपने इसी गांव को शहर की तरह बनाना चाहता हूँ जैसे शहर में लोग पढ़ते-लिखते हैं और तरक्की करते हैं वैसे ही हमारे गांव के बच्चे भी तरक्की करेंगे।"**

तब बच्चों ने सवाल पूछा की आखिर ये होगा कैसे?? लड़के ने जवाब दिया जो भी मैंने पुस्तकालय में सीखा है। मैं वो सब कुछ तुम्हें सिखाऊंगा। तुम सब मुझे बता दो की तुम लोग बनना क्या चाहते हो??

बच्चों ने अपने-अपने सपने लड़के को बता दिए। अब लड़का रोज़ पुस्तकालय जाता और बच्चों के जरूरत की सारी जानकारी एक किताब में लिख लेता और वापस आकर बच्चों को वो सब कुछ सिखाता जो उसने अपनी किताब में लिखा है। अब वह लड़का अपना साथ साथ गांव के उन बच्चों के सपनों के लिए भी मेहनत कर रहा था।

कुछ सालों में ही उस लड़के ने सिर्फ अपना ही नही बल्कि उन सभी बच्चों का भी ये सब देखकर लड़के के उसी दोस्त ने पूछा - **"तेरा सपना तो एक महान लेखक बनने का था तो तूने इन बच्चों पर अपना वक्त बर्बाद क्यों कर रहा है ?"**

लड़का ने अपने दोस्त से कहा - तू समझा नहीं, **"मैंने सपना देखा था एक बड़ा लेखक बनकर अपने गांव का नाम रौशन करूंगा।"** और जब मैंने सब को अपने सपने के बारे में बताया था तब सब ने कहा था कि मुझसे नही हो पाएगा क्योंकि मैं छोटे से गांव में रहता हूं।

आज देखना इस **छोटे से गांव के बच्चे ही अपने सपने पूरे करके इस छोटे से गांव के नाम को बहुत बड़ा बना देंगे और देखना जब ये सफलता हासिल कर लेंगे तो इनकी सफलता की कहानी मैं खुद लिखूंगा तब मैं भी एक बड़ा लेखक बन जाऊंगा और तब मेरा सपना भी साकार हो जायेगा।**

भारतीय परम्परा
की मासिक ई-पत्रिका के पुराने सभी अंकों को देखने के लिए किताब के आइकन पर स्पर्श करें !!

नियत कार्यक्रम के अनुसार भोपाल से नवमी की पूजा करके प्रातः सात बजे हम दोनों और भाई साहब -भाभी ओरछा के लिए निकल गए। नाश्ता, भोजन सभी साथ था। प्राकृतिक सौंदर्य, इतिहास, धर्म और सांस्कृतिक धरोहर का साक्षात्कार कराने वाली यात्रा होगी - बहुत आनंद रहेगा, यह सोच हमको उल्लसित किए था।

सूरज अपनी किरणों के रंग बिखरते हुए पूरब की सीढ़ियाँ चढ़ रहा था। मैं हाथ जोड़कर खड़ी प्रार्थना कर रही थी- **"सूर्यदेव, आपका पावन प्रकाश मन को आलोकित करते हुए हमें नई शक्ति, तेज और सकारात्मक ऊर्जा प्रदान करें। सभी प्राकृतिक शक्तियाँ हमारी सुरक्षा और सहायता करें।"**

हमारी कार अपने गंतव्य की ओर बढ़ रही थी। प्रभात बेला में नई ऊर्जा से भरी शीतल हवा, फूलों की सुगंध वातावरण में घोल रही थी। झूमते हुए वृक्ष वातावरण को सुखद, सुंदर बना रहे थे। हम सुहावने मौसम और सुन्दर प्राकृतिक दृश्यों का आनन्द लेते हुए, मन में रामलला के दर्शन की ललक लिए अपने पावन गंतव्य की ओर बढ़ रहे थे।

लगभग दोपहर 12 बजे हम झांसी में प्रवेश कर गए। ओरछा झांसी से मात्र 15 किमी. की दूरी पर बुन्देलखण्ड क्षेत्र के निवाड़ी जिले में बेतवा और जामनी नदी के संगम पर एक छोटे द्वीप की तरह बसा हुआ सुन्दर ऐतिहासिक और धार्मिक नगर है। इसकी स्थापना रुद्र प्रताप सिंह बुंदेला द्वारा ओरछा राज्य की राजधानी के रूप में सन् 1501 के लगभग हुई थी। यहाँ प्रवेश करते ही हमें शीतलता, शान्ति और भक्ति की सुखद तरंगों का आभास होने लगा। सुन्दर ऐतिहासिक भवन, मंदिर, मनभावन हरीतिमा के दर्शन ने हमारी रास्ते की थकान को मेट दिया।

गुगल लिंक के माध्यम से हम ओरछा पैलेस होटल एंड कन्वेंशन सेंटर के द्वार पर पहुँच गए। द्वार की भव्यता और द्वारपाल के परम्परागत विनम्र अभिवादन ने मन को खुश कर दिया। होटल में प्रवेश द्वार पर गणेश जी की भव्य कलात्मक और जीवन्त प्रतिमा को प्रणाम करते हुए हम स्वागत कक्ष में पहुँचे और औपचारिकता पूरी करके कक्ष की ओर। कक्ष मार्ग की सज्जा अद्भुत थी। दीवारों पर कृष्ण लीला दर्शाते अति

मनोहारी बड़े-बड़े भित्ति चित्र शोभित थे। कक्ष की सजावट अति आधुनिक और आनंदित करने वाली थी।

हम लगभग तीन बजे ओरछा दर्शन पर निकले। भाई साहब ही गाइड के रूप में हमारे साथ थे, जिनकी बातों में इतिहास, धर्म और संस्कृति के ज्ञान की झलक मिल रही थी - वे पहले भी यहाँ आ चुके हैं। मौसम बहुत ही अनुकूल था। बादलों के अनुरोध पर सूरज ने अपने ताप को मनभावन बना दिया था। हमारी इच्छा सर्वप्रथम रामलला के दर्शन की थी,पर मंदिर तो निर्धारित समय पर ही खुलता है। हमारी गाड़ी ओरछा किले की ओर बढ़ रही थी। हमारे होटल से किला पहुँचने में दस मिनट भी नहीं लगे। किले की सुन्दर इमारत और उससे जुड़ी रोमांचक कहानियाँ हमारे कदमों को गति दे रही थी। इस किले का निर्माण "सोलहवीं शताब्दी के प्रारंभ में रुद्रप्रताप सिंह" ने करवाया था।

एक सुंदर बड़े प्रवेश द्वार से हम किला परिसर में प्रविष्ट हुए। यहाँ चतुर्भुजाकार में कई सुन्दर भवन दिखाई दे रहे थे - **राजा महल (जिसे राजा मंदिर कहते हैं), शीश महल, जहाँगीर महल, मंदिर आदि।** ये महल बुंदेला राजपूतों की वास्तुशिल्प के सुन्दर प्रमाण हैं। खुले गलियारे, पत्थरों वाली जाली, जानवरों की मूर्तियाँ, बेलबूटे जैसी तमाम बुंदेला वास्तुशिल्प की विशेषताएं यहां साफ दिखाई दे रही थीं। हमें ओरछा के किसी भी इतिहास में रुचि कम ही थी। हमें तो रामलला की नगरी और बेतवा नदी के सौन्दर्य को निहारना था। इसलिए हम किले की भव्यता को बाहर से ही देखते हुए बेतवा नदी की ओर बढ़ गए।

कल-कल बहती नदी के किनारों पर दूर तक समृद्ध वनश्री ने जल को अपने सौंदर्य प्रतिबिम्ब से सजा रखा था। राह की चट्टानों को चुनौती देती नदी की धारा मुझे अत्यधिक प्रिय है। बुंदेलखंड की इस पवित्र गंगा ने प्रथम दर्शन में ही मुझे मोहित कर लिया। इसका उल्लेख पौराणिक साहित्य में वेत्रवती और शक्तिमोदिनी के नाम से मिलता है। मुझे अनुभव हुआ कि इसका शक्तिमोदिनी नाम कितना सार्थक है यह शक्ति और मोद का जीवंत रूप है। हम पुल पर खड़े राजा राम की पावन नगरी और नदी के सौंदर्य का पान कर रहे थे। वातावरण में सुहानी शीतलता घुल रही थी। सूर्यास्त समय हो रहा था। आकाश में बादलों की सुनहरी कोर बन रही थी। जल में प्रतिबिम्बित सतरंगी आकाश की छटा न्यारी थी। संध्या सूर्य का आलिंगन करते हुए लजा कर लाल हो रही थी। सूरज संध्या का आंचल थामें अपनी परछाई से नदी में अग्नि स्तंभ बनाते हुए धीरे-धीरे अपने विश्रान्ति भवन की ओर अग्रसर था। अपने नीड़ों में लौटते पक्षी

कलरव करते हुए मानो सूर्यदेव का आभार -गीत गा रहे थे। नदी के सौंदर्य और अस्ताचलगामी सूर्य के प्रकाश ने ओरछा के भवनों और मंदिरों के सौंदर्य में चार चाँद लगा दिए थे। चारों ओर एक जादुई मायाजाल - सा निर्मित हो गया था। हम नीचे घाट पर आ गए थे और जल का पावन स्पर्श करना चाहते थे पर भक्त - पर्यटकों की संख्या और कोलाहल बढ़ रहा था, दूसरे दिन दशहरा होने से भीड़ अधिक थी। इस कारण सुबह जल्दी नदी पर आने का मन बना कर राजा राम मंदिर के लिए चल दिए।

मैं मानती हूँ कि राम एक भाव है, जो प्रकृति के कण-कण में प्रवाहित है। जो हमारे अभिवादन में स्नेह बनकर उमड़ता है, हमारे आशीर्वादों को जीवंत करता है, पारस्परिकता को पल्लवित करता है। दुखद अभिव्यक्ति में करुणा बनकर सहलाता है। हमारे अधरों पर मुस्कान बन दौड़ जाता है। आँखों से प्रेमाश्रु बनकर ढुलक जाता हैं। जब यह भाव जब उमड़ते हैं तो रामायण और रामचरितमानस रच देते हैं, साकेत को आकार देते हैं।

यहाँ हम अनुभव कर रहे थे कि राम ओरछा के प्राणों में विराजमान हैं, सबकी धड़कन में राम हैं। यहाँ राम धर्म, जाति और वर्ग भेद से परे सभी के आराध्य हैं।

अयोध्या और ओरछा की दूरी लगभग 417 किलोमीटर है और इनका पर सम्बन्ध लगभग 600 बरस का है।

किंवदंतियों और कथाओं के अनुसार ओरछा के शासक मधुकरशाह कृष्ण भक्त थे, जबकि उनकी **"महारानी गणेशकुंवर"** राम की परम भक्त थीं। एक बार मधुकर शाह ने रानी को कृष्ण दर्शन हेतु वृंदावन चलने का प्रस्ताव दिया पर रानी ने इसके स्थान पर अयोध्या जाने की जिद कर ली। तब राजा ने क्रोध में कहा - अगर तुम्हारे राम सच में हैं तो उन्हें अयोध्या से ओरछा लाकर दिखाओ।

राजा की बात को चुनौती के रूप में स्वीकार कर रानी ने अयोध्या के सरयू तट पर साधना शुरु की। यहाँ उन्हें संत तुलसीदास का आशीर्वाद और मार्गदर्शन भी मिला। रानी की 21 दिनों की कठोर तपस्या के बाद जब श्री राम ने उन्हें दर्शन नहीं दिए तो उन्होंने हताश होकर नदी में छलांग लगा दी। वहीं उन्हें श्रीराम के दर्शन हुए और रानी ने श्री राम से ओरछा चलने का वरदान मांगा।

राम जी ने रानी के सामने तीन शर्त रखी - पहली, मैं यहाँ से जाकर जिस जगह बैठा दिया जाऊँगा, वहाँ से नहीं उठूँगा। **दूसरी,** मेरे ओरछा के राजा के रूप विराजित होने के बाद किसी दूसरे की राजसत्ता नहीं रहेगी। **तीसरी शर्त** बाल रूप को ग्रहण कर पैदल

चल कर पुष्य नक्षत्र में साधु संतों को साथ ले जाना होगा। भक्त रानी ने सभी शर्त स्वीकार कर राजा को संदेश भेजा कि वे भगवान को लेकर आ रही हैं। सूचना पाते ही राजा ने श्री राम के लिए भव्य मंदिर निर्माण शुरू करवा दिया किन्तु रानी के आने तक मंदिर पूर्ण नहीं हो सका।

जब महारानी ओरछा पहुंची तो उन्होंने भगवान राम की बाल स्वरूप मूर्ति की स्थापना अपने रसोई में कर दी यह सोचकर की जब मंदिर निर्माण पूर्ण हो जाएगा, तब रसोई से भगवान राम को मंदिर में स्थापित कर देंगे। मंदिर निर्माण कार्य पूर्ण होने पर महारानी ने भगवान राम को मंदिर में स्थापित करने की खूब कोशिश की किन्तु ऐसा नहीं हो सका।

ओरछा के रामराजा मंदिर में जड़े शिलालेख के अनुसार महारानी, **भगवान राम को विक्रम संवत 1631 (सन् 1574) में चैत्र शुक्ल की नवमी को ओरछा लेकर आईं।** ऐतिहासिक तथ्यों के अनुसार **महारानी, भगवान राम को अयोध्या से लेकर ओरछा तक पुष्य नक्षत्र में कुल 8 माह 28 दिनों तक पैदल चलीं।** यह भी एक अद्भुत संयोग था कि जिस दिन **संवत 1631 को राम राजा का ओरछा में आगमन हुआ, उसी दिन रामचरित मानस का लेखन भी प्रारंभ हुआ।**

ओरछा में स्थापित मूर्ति के विषय में भी यहाँ कई कथाएँ प्रचलित हैं। **कुछ लोगों का विश्वास है कि राम ने वन गमन के समय अपनी एक बाल मूर्ति माता कौशल्या को दी थी। माता कौशल्या उस मूर्ति को राम मानकर भोग लगाया करती थीं। राम के अयोध्या लौट आने पर माता ने यह मूर्ति सरयू नदी में प्रवाहित कर दी थी। यही मूर्ति गणेशकुंवर राजे को सरयू की धार में मिली।** कुछ लोगों का कथन है कि जब **अयोध्या में इस्लामिक आक्रान्ताओं का आक्रमण हुआ और मंदिर को तोड़ दिया गया तो साधु-संतों ने भगवान राम के वास्तविक विग्रह को सरयू नदी में बालू के नीचे दबा दिया था। बाद में भगवान राम का यही वास्तविक विग्रह महारानी गणेशकुंवर राजे की गोद में प्रकट हुआ और यही वास्तविक प्रतिमा आज ओरछा में विराजमान है।** यही कारण है कि ओरछा का महत्व भी अयोध्या के समान ही है। राम यहाँ ओरछाधीश के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

यहाँ एक कहानी यह भी चलती है कि त्रेतायुग में राजा दशरथ अपने पुत्र श्री राम का राज्याभिषेक नहीं कर सके, ऐसे में राजा मधुकर शाह ने अपना कर्त्तव्य निभाया और राजा रामचन्द्र का राज्याभिषेक किया एवं अपना राज्य राजा रामचन्द्र को सौंप दिया। यह व्यवस्था आज भी बनी हुई है। यह **विश्व में राम का एकमात्र मंदिर है, जहाँ राम की**

पूजा राजा के रूप में होती है और उन्हें सूर्योदय के पूर्व और सूर्यास्त के पश्चात सलामी दी जाती है। रामराजा मंदिर के चारों तरफ हनुमान जी के मंदिर हैं। छड़दारी हनुमान, बजरिया के हनुमान, लंका हनुमान के मंदिर एक सुरक्षा चक्र के रूप में चारों तरफ हैं।

यहाँ **लोक विश्वास है कि भगवान श्रीराम के दो निवास हैं। श्रीराम दिनभर ओरछा में रहने के बाद शयन के लिए गृहनगर अयोध्या चले जाते हैं।** इसी भावना से प्रेरित प्रतिदिन रात में यहाँ ब्यारी (संध्या) की आरती होने के बाद ज्योति निकलती है, जो कीर्तन मंडली के साथ पास ही पाताली हनुमान मंदिर ले जाई जाती है। मान्यता है कि ज्योति के रूप में भगवान श्रीराम को हनुमान मंदिर ले जाया जाता है, जहाँ से हनुमान जी शयन के लिए भगवान श्रीराम को अयोध्या ले जाते हैं।

बुंदेलखंड की अयोध्या के नाम से मशहूर ओरछा के राजा राम मंदिर की वास्तुकला अद्भुत है। यह एक बहु-मंजिला महल है, जिसमें मेहराबदार प्रवेशद्वार, एक मुख्य मीनार है और चारों ओर से वह बंद है। मंदिर की बाह्य सज्जा कमल के प्रतीक और धार्मिक महत्व के अन्य प्रतीकों से की गई है। अब यह मंदिर भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (एएसआई) के अंतर्गत आता है।

मंदिर मार्ग पर कतारबद्ध प्रसाद की दुकानें सजी हुई थीं। भंडारे भी चल रहे थे। भक्तों ने ही सुन्दर व्यवस्था बना रखी थी। कोलाहल में भी भक्ति की तरंगें थी। बहुत ही शांति से राजाराम के दर्शन हुए। मन एकदम शांत और पावन भावों से भरा था। मन की आँखें दिव्य रूप रस पान करते हुए अघातीं नहीं थी। तन-मन रोमांचित था।

मंदिर का परिसर अद्भुत भावात्मक एकता से सराबोर था जो सामाजिक समरसता और मानव मूल्यों का पाठ पढ़ा रहा था। दूसरे दिन दशहरे की सुबह पुनः दर्शन का निश्चय करके हम इतिहास के दर्शन करने के उद्देश्य से लाइट एंड साउंड प्रोग्राम देखने पहुँच गए। बहुत शानदार प्रदर्शन था।

- डॉ स्नेहलता श्रीवास्तव जी, अध्यक्ष हिंदी साहित्य भारती, इंदौर (मध्य प्रदेश)

हिंदुस्तान में जो ज्यादा कर्ज लेते हैं वो भाग जाते हैं जो कम लेते हैं उनका माफ कर दिया जाता है! जो नहीं लेते उनसे दोनों का वसूल किया जाता है।

कैसी माया है दुनिया की... केले खाने से हड्डी मजबूत होती है. और केले के छिलके पर पैर रखने से टूट जाती है।

तारीफ किये बिना कोई खुश होता नहीं और झूठ बोले बिना किसी की तारीफ होती नहीं।

बाथरूम में कोई फिल्मी गाना गा रहा है, तो समझ लो गर्म पानी से नहा रहा है..! और भजन गा रहा है तो ठंडे पानी से नहा रहा है.. !

हां तो पूछना यह था कि विद्या कसम, भगवान कसम खाने वाली प्रजातियां लुप्त हो गईं या कुछ हैं अभी भी जिन्दा है..!

यदि चाय न होती तो भारत की आधी जनसंख्या सिरदर्द से मर जाती...!

1) फ्रूट पंच

सामग्री: 1 मध्यम आकार का अनानास, 10-12 संतरे, 4 टेबलस्पून चीनी, 1 टेबलस्पून नींबू का रस, 2 टीस्पून अदरक का रस, 1 टेबलस्पून बारीक कटा हुआ पुदीना, स्वाद के अनुसार नमक और सफेद या काली मिर्च पाउडर, चाट मसाला।

विधि: अनानास का जूस, संतरे का जूस, नींबू और अदरक का रस, पकाया हुआ अनानास, संतरे का गुदा, पुदीना, नमक, सफेद या काली मिर्च पाउडर, चाट मसाला, और कुचली हुई बर्फ को अच्छी तरह से मिलाएं। ठंडा फ्रूट पंच को गिलास में डालें, जिसे अनानास के स्लाइस और चेरी गिलास के किनारे पर सजाकर प्रस्तुत करें।

2) रंगीन मठरी

सामग्री: दो कप गेहूं का आटा, स्वाद के हिसाब से नमक और अजवाइन, मोयन के लिए तेल, एक कप पालक प्यूरी, एक कप बीटरूट प्यूरी।

विधि: आटा, नमक, अजवाइन, तेल सब को मिलाकर तीन हिस्सों में बाँटें, एक हिस्से में पालक प्यूरी डालकर आटा गूंथें। दूसरे हिस्से में बीटरूट प्यूरी डालकर आटा गूंथें।

और तीसरे हिस्से में सादा पानी डालकर आटा गूंथें। तीनों आटों की छोटी-छोटी पुरियां बनाकर एक पर एक रखें और उन्हें रोल बनाकर डेढ़ इंच के आकार में काटें। फिर उन्हें हल्के हाथों से बेलकर गरम तेल में सुनहरा होने तक तलें। यह बढ़िया क्रिस्पी मठरी को होली पर सर्व करें।

विविधा कुकिंग क्लासेस, पूनम राठी जी, नागपुर

"कृतज्ञता" एक सकारात्मक भावना है और यह तब पैदा होती है, जब हम यह स्वीकारते हैं कि ज़िन्दगी में अच्छाई है। जब हम यह भरोसा करते हैं, कि जीवन में अच्छाई पाने में **हमें किसी व्यक्ति या अदृश्य शक्ति ने मदद की है, तब हम "कृतज्ञता" के भाव से भर जाते हैं।** जब कोई हमारे प्रति दयालु होता है, तो हम "कृतज्ञता" महसूस करते हैं। "कृतज्ञता" महसूस करना सिक्के का एक पहलू है, लेकिन इस भावना के लिए आभार जताना भी उतना ही महत्वपूर्ण है।

किसी के प्रति "कृतज्ञता" जताना हमें मनोवैज्ञानिक तौर पर मजबूत करता है और कई अध्ययनों से यह साबित हुआ है, कि आभार जताने का दृष्टिकोण रखने से भावनात्मक सेहत के साथ-साथ आपसी सम्बन्धों पर भी सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। आभार जताना और स्वीकारना मुश्किल वक्त में हमें बेहतर महसूस कराता है।

छोटी-छोटी बातों पर "कृतज्ञता" जताने से मानसिक सेहत बेहतर होती है, साथ ही आत्मसम्मान और रोज़मर्रा की ज़िन्दगी में संतुष्टि का भाव भी बढ़ता है। "कृतज्ञता" का भाव रखने से अवसाद और चिन्ता में बहुत कमी आती है। परिचितों, दोस्तों या जीवन साथी के प्रति आभार जताना रिश्तों को मज़बूत करता है और हमें एक-दूसरे से जोड़े रखने में भी मदद करता है। एक शोध के मुताबिक जो लोग आभार के प्रति झुकाव रखते हैं, उनका ब्लड-प्रेशर नहीं बढ़ता और हृदय गति भी सामान्य रहती है। इसके लिए कोई लम्बी चिट्ठी की आवश्यकता नहीं होती, छोटा सा "धन्यवाद" भी काम कर सकता है।

हे परमात्मा!!.... सर्वप्रथम, हम आपके प्रति "कृतज्ञता" प्रकट करते हैं कि आपने हमें इतना सुन्दर जीवन दिया.... धरती, आकाश, जल, वायु, पेड़-पौधों और धरती के सभी प्राणियों के प्रति हम आभार व्यक्त करते हैं, जिनके ही कारण हम अपना जीवन अच्छी तरह से जी पा रहे हैं..... दिन में कम से कम एक बार हम किसी के प्रति आभार अवश्य व्यक्त करना चाहिए।

इसे स्थाई आदत बनाने के लिए इसे हम अपनी दिनचर्या से जोड़ने की कोशिश करें और इससे अपने भावों एवं परिणामों को निर्मल बनाने का प्रयास करें। सबका जीवन शांत और सुख से बीते, यही ईश्वर से प्रार्थना है।

- मधु अजमेरा जी, ग्वालियर (म. प्र.)

अनमोल संवाद जिसमें मनुष्य जीवन के सारे प्रश्नों के उत्तर निहित है।

यक्ष – जीवन का उद्देश्य क्या है ?

युधिष्ठिर – जीवन का उद्देश्य प्राणी मात्र में स्थित आत्मा को जानना है जो जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है। उसे जानना ही मोक्ष है।

यक्ष – जन्म का कारण क्या है ?

युधिष्ठिर – अतृप्त वासनाएं, कामनाएं और कर्मफल ये ही जन्म का कारण हैं।

यक्ष – जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त कौन है ?

युधिष्ठिर – जिसने स्वयं को, उस आत्मा को जान लिया वह जन्म और मरण के बन्धन से मुक्त है।

यक्ष – वासना और जन्म का सम्बन्ध क्या है ?

युधिष्ठिर – जैसी वासनाएं वैसा जन्म। यदि वासनाएं पशु जैसी तो पशु योनि में जन्म। यदि वासनाएं मनुष्य जैसी तो मनुष्य योनि में जन्म।

यक्ष – संसार में दुःख क्यों हैं ?

युधिष्ठिर – लालच, स्वार्थ, भय संसार के दुःख का कारण हैं।

यक्ष – तो ईश्वर ने दुःख की रचना क्यों की?

युधिष्ठिर – ईश्वर ने संसार की रचना की और मनुष्य ने अपने विचार और कर्मों से दुःख और सुख की रचना की।

यक्ष – 1) क्या ईश्वर है ?
2) कौन है वह ? 3) क्या रूप है उसका ?
4) क्या वह स्त्री है या पुरुष ?

युधिष्ठिर – हे यक्ष ! कारण के बिना कार्य नहीं। यह संसार उस कारण के अस्तित्व का प्रमाण है। तुम हो इसलिए वह भी है उस महान कारण को ही अध्यात्म में ईश्वर कहा गया है। वह न स्त्री है न पुरुष।

यक्ष – उसका स्वरूप क्या है ?

युधिष्ठिर – वह सत्-चित्-आनन्द है, वह अनाकार ही सभी रूपों में अपने आप को स्वयं को व्यक्त करता है।

यक्ष – वह अनाकार स्वयं करता क्या है ?

युधिष्ठिर – वह ईश्वर संसार की रचना,

पालन और संहार करता है।

यक्ष – यदि ईश्वर ने संसार की रचना की तो फिर ईश्वर की रचना किसने की?

युधिष्ठिर – वह अजन्मा अमृत और अकारण हैं।

यक्ष – भाग्य क्या है ?

युधिष्ठिर – हर क्रिया, हर कार्य का एक परिणाम है। परिणाम अच्छा व बुरा भी हो सकता है। यह परिणाम ही भाग्य है। आज का प्रयत्न कल का भाग्य है।

यक्ष – सुख व शान्ति का रहस्य क्या है ?

युधिष्ठिर – सत्य, सदाचार, प्रेम और क्षमा सुख का कारण हैं। असत्य, अनाचार, घृणा व क्रोध का त्याग शान्ति का मार्ग है।

यक्ष – चित्त पर नियंत्रण कैसे संभव है ?

युधिष्ठिर – कामनाएं चित्त में उद्वेग उत्पन्न करती हैं। कामनाओं पर विजय चित्त पर विजय है।

यक्ष – सच्चा प्रेम क्या है ?

युधिष्ठिर – स्वयं को सभी में देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सर्वव्याप्त देखना सच्चा प्रेम है। स्वयं को सभी के साथ एक देखना सच्चा प्रेम है।

यक्ष – तो फिर मनुष्य सभी से प्रेम क्यों नहीं करता ?

युधिष्ठिर – जो स्वयं को सभी में नहीं देख सकता वह सभी से प्रेम नहीं कर सकता।

यक्ष – आसक्ति क्या है ?

युधिष्ठिर – नश्वर देह व वस्तु से अपेक्षा, अधिकार आसक्ति है।

यक्ष – बुद्धिमान कौन है ?

युधिष्ठिर – जिसके पास सत्संग से प्राप्त विवेक है।

यक्ष – नशा क्या है ?

युधिष्ठिर – नश्वर माया में आसक्ति।

यक्ष – चोर कौन है ?

युधिष्ठिर – इन्द्रियों के आकर्षण, जो इन्द्रियों को हर लेते हैं, चोर हैं।

यक्ष – जागते हुए भी कौन सोया हुआ है ?

युधिष्ठिर – जो आत्मा रूपी परमात्मा को नहीं जानता वह जागते हुए भी सोया है।

यक्ष – कमल के पत्ते में पड़े जल की तरह अस्थायी क्या है ?

युधिष्ठिर – यौवन, धन और जीवन।

(क्रमश:अगले माह)

- गोवर्धन दास बिन्नाणी जी, 'राजा बाबू' बीकानेर (राज.)

वैदिक सनातन संस्कृति एक ऐसा विशाल वट वृक्ष है, जिसकी शाखाओं - प्रशाखाओं के रूप में संस्कृति के विभिन्न रंगों की झलक मिलती है। इसमें विभिन्न पर्वों का महत्व, ज्ञान-विज्ञान एवं प्राकृतिक परिवेश के रूप में दृष्टिगोचर होता है। हमारे ऋषि - मुनियों ने समाज के सर्वोत्तम एवं श्रेष्ठ भविष्य के लिए प्रकृति को ही आधार माना है। प्रकृति जब अपना बासी पन परे हटाकर नया कलेवर ग्रहण करती है, तब उसका रूप, रंग और यौवन निखरता है। मौसम में वासंती पवन बहने लगता है, जीव-जंतुओं में नव उमंग-उत्साह जाग्रत हो उठता है। पीले और मुरझाए पत्ते वृक्षों से गिरकर नई कोंपलें और नए पत्ते आते हैं। यह ऋतुराज वसंत आने की आहट है। फाल्गुन आ गया अर्थात होली ने द्वार पर दस्तक दी है।

होली हिंदुओं का वैदिक कालीन पर्व है। होली के इस पर्व को यौवनोत्सव, रंगोत्सव, मदनोत्सव, वसंतोत्सव, दोलयात्रा तथा शिमागा के रूप में भी मनाए जाने की परंपरा है।

होली का आदिकालीन स्वरूप -

वैदिक कालीन होली की परंपरा का उल्लेख अनेक ग्रंथों में मिलता है। **जैमिनी मीमांसा दर्शनिकार ने अपने ग्रंथ 'होलिकाधिकरण' नामक प्रकरण में होली की प्राचीनता को स्थापित किया है।** विंध्य प्रदेश के रामगढ़ नामक स्थान से प्राप्त 300 ईसापूर्व के शिलालेख में फाल्गुन पूर्णिमा को मनाए जाने वाले इस उत्सव का उल्लेख मिलता है। महर्षि वात्स्यायन ने अपने 'कामसूत्र' नामक ग्रंथ में ' होलाक' उत्सव का वर्णन है, जिसमें ढाक के पुष्पों के रंग से तथा चंदन - केसर आदि सुगंधित द्रव्यों से होली खेलने की परंपरा बताई गई है।

प्राचीन काल में होली की अग्नि में हवन के समय वेदमंत्र **'रक्षोहणं बल्गहणम'** के उच्चारण का विधान है। होली का वर्णन सातवीं शताब्दी के संस्कृत नाटककार और कन्नौज के महाराज हर्षवर्धन ने अपने नाटक ग्रंथ 'रत्नावली' में किया है। वहाँ होली का नाम 'वसंतोत्सव' है। इस नाटक में राजा उदयन अपने किले पर खड़े होकर सारी प्रजा को विभिन्न रंगों से होली खेलते हैं। लोग प्रमुदित होकर एक-दूसरे पर सुगंधित जल डालते हैं। पहली शताब्दी के आसपास प्राकृत भाषा में लिखी **'गाहा सतसई'** में

होली **'फाल्गुनोत्सव'** है, जिसमें नदी किनारे एकत्र युवक - युवतियाँ एक - दूसरे पर बिना किसी भेदभाव के नदी का जल तथा कीचड़ उछाल रहे हैं। ध्यान देने वाली बात है कि जब 'गाहा सतसई' की होली खेली जा रही थी, तब वात्स्यायन महर्षि ने 'कामसूत्र' में सुवसंतक, उदकक्ष्वेडिका और अभ्युषखादिका जैसे उत्सवों की चर्चा कर रहे थे। इसमें 'सुवसंतक' संभवतः वर्तमान में मनाए जाने वाली 'वसंत पंचमी' है। 'उदकक्ष्वेडिका' पानी की पिचकारियों से रंग खेलने का उत्सव है। **'अभ्युषखादिका'** का तात्पर्य नए धान्य को आग में भूनकर खाने से है।

'रघुवंश' में कालिदास ने लिखा है कि इस अवसर पर 'संपन्न जन, सोने की पिचकारियों में रंग भरकर फुहारें छोड़ते। केशों से कुंकुम मिलीं बूंदें टपकतीं रहतीं। राजा और प्रजा सभी मिलकर एक - दूसरे पर रंग डालते। संपूर्ण वातावरण रंगमय, प्रेममय और सुगंधित हो जाता। हास-परिहास भी भरपूर मात्रा में चलता रहता।' संस्कृत के एक अन्य ग्रंथ **कुमार पाल चरित** में लिखा है कि' कोई पिचकारी का प्रयोग करता, कोई मुख से ही जल भरकर प्रियजन पर छोड़ता। कोलाहल और संगीत से वातावरण मनोरंजक और आनंदमय हो उठता।'संस्कृत के प्रसिद्ध लेखक सोमेश्वर ने अपने ग्रंथ **'मानसोल्लास'** में होलिकोत्सव का वर्णन किया है - भोजन के पश्चात राजा, कुमार और मंत्रियों के साथ दोपहर बाद एक मंडप में बैठता था। अतिथि भी आते थे। इसके पश्चात पूर्ण श्रृंगारित वारांगनाएँ, नूपुरों से मधुर ध्वनि करती हुई वहाँ आतीं। राजा पर सुगंधित जल डाला जाता। इसके पश्चात राजा भी कुंकुम, चंदन और हल्दी मिश्रित जल, सेवकों पर छोड़ता और उन्हें सम्मानित करता।'

कहा जाता है कि प्राचीन काल में इसी फाल्गुन पूर्णिमा से प्रथम चातुर्मास संबंधी 'वैश्वदेव' यज्ञ का प्रारंभ होता था, जिसमें लोग खेतों में तैयार नई फसल के अन्न - गेहूँ, चना, जौ आदि की आहुति देते थे और स्वयं यज्ञ शेष प्रसाद के रूप में ग्रहण करते थे। आज भी यह परंपरा 'नवशस्येष्टि यज्ञ पर्व' (नवान्नेष्टि यज्ञ) के रूप में विद्यमान है। यह 'यज्ञ पर्व' ही होली का आदिम स्वरूप था। यह आयोजन फाल्गुन की पूर्णिमा को किया जाता रहा है। चने के अधभुने दाने को संस्कृत में 'होलक' तथा हिंदी में 'होला' कहा जाता है। वस्तुतः होली ईश्वर को नई फसल के प्रसाद के अर्पण का त्योहार है।

होली की दंतकथाएँ -

धार्मिक पुस्तकों तथा शास्त्रों में होली को लेकर अनेक दंतकथाएँ प्रचलित हैं, उनमें से कुछ प्रमुख इस प्रकार हैं -

नारद पुराण के अनुसार :

होली ईश्वर के परम भक्त प्रह्लाद की विजय और ईश्वरद्रोही हिरण्यकशिपु की बहिन 'होलिका' के विनाश का स्मृति दिवस है। कहते हैं कि हिरण्यकशिपु तथा होलिका कुल के राक्षस बहुत अत्याचारी थे। उनके घर में अवतरित बालक प्रह्लाद भगवान का भक्त था। उसको भस्म करने के लिए होलिका उसे अपनी गोद में लेकर अग्नि में बैठी थी, क्योंकि होलिका को अग्नि में न जलने का वरदान प्राप्त था। भगवान की कृपा से होलिका का अग्नि में न जलने का वरदान असफल हो गया और वह आग में जलकर भस्म हो गई, जबकि भक्त प्रह्लाद सकुशल बच गया। तभी से होलिकोत्सव पर होली दहन की परंपरा चल पड़ी।

भविष्य पुराण के अनुसार :

कहा जाता है कि महाराजा रघु के समय 'ढुंदा' नामक राक्षसी के उपद्रव से निपटने के लिए महर्षि वशिष्ठ के आदेशानुसार बालकों को लकड़ी की तलवार-ढाल लेकर हो-हल्ला मचाते हुए स्थान-स्थान पर अग्नि प्रज्वलन का आयोजन किया गया था। इस राक्षसी को तृप्त करने के लिए लोगों से यह अपेक्षा की गई कि वे निर्भीक और निशंक होकर एक दूसरे को गाली दें, हुड़दंग मचाएँ और अपने शरीर पर भस्म और मिट्टी लगाकर इधर-उधर उछल -कूद करें। ऐसा भी संभव है कि महर्षि ने मनुष्य के अंदर छिपे हुए राक्षसी भावनाएँ व्यक्त करने के लिए हास-परिहास का एक दिन सुनिश्चित किया हो जिससे शेष दिन प्रेम व्यवहार से नियमित-संयमित रह सके।

कामदेव की पूजा का दिन मदनोत्सव :

होली को वसंत सखा 'कामदेव' की पूजा का दिन भी माना जाता है। पहले कामदेव की पूजा आज के दिन संपूर्ण भारत में की जाती थी। दक्षिण भारत में आज भी होली का उत्सव 'मदनोत्सव' के नाम से ही जाना जाता है।

वैष्णवों के लिए यह **'दोलोत्सव'** का दिन है। ब्रह्म पुराण के अनुसार -

नरो दोलागतं दृष्टा गोविंदं पुरुषोत्तमं।
फाल्गुन्यां संयतो भूत्वा गोविंदस्य पुरं ब्रजेत॥

इस दिन झूले में झूलते हुए गोविंद भगवान के दर्शन से मनुष्य वैकुण्थ को प्राप्त होता है। वैष्णव मंदिरों में भगवान श्रीमद नारायण का अलौकिक श्रृंगार करके नाचते गाते उनकी पालकी निकाली जाती है। पूर्वी उत्तर प्रदेश में पूर्णिमा पर मासांत माना जाता है तथा फाल्गुन पूर्णिमा को वर्ष का अंत हो जाता है और अगले दिन चैत्र कृष्ण प्रतिपदा से भारतीय नव वर्ष आरंभ हो जाता है, इसीलिए वहां पर लोग होली पर्व को **'संवत जलाना'** भी कहते हैं।

यह वर्षांत पूर्णिमा है, अतः आज के दिन सब लोग हँस - गाकर, रंग-अबीर से खेलकर नए वर्ष का स्वागत करते हैं।

इस दिन मनु का जन्म हुआ था, इसलिए इस दिन को 'मन्वादितिथि' पर्व के रूप में भी जाना जाता है। पुराणों के अनुसार ऐसी मान्यता है कि जब भगवान शंकर ने अपनी क्रोधाग्नि से कामदेव को भस्म कर दिया था, तभी से होली का प्रचलन हुआ।

मुगल शासक भी खेलते थे होली -

होली के पर्व को मुगल शासक भी शान से मनाते थे। ग्यारहवीं शताब्दी में मुस्लिम पर्यटक अलबरूनी ने भारत में होली के उत्सव का वर्णन करते हुए लिखा है कि 'उस समय हिंदू और मुसलमान मिलकर होली मनाया करते थे।' बादशाह अकबर और जहांगीर के समय में शाही परिवार में भी इसे बड़े समारोह के रूप में मनाया जाता था।

विश्वव्यापी है होली पर्व -

होलिकोत्सव विश्वव्यापी पर्व है। अनेक देशों में इसको अन्य विविध नामों से अलग-अलग समय में मनाया जाता है। इटली में यह उत्सव फरवरी में 'रेडिका' नाम से मनाते हैं। फ्रांस में घास से बनी मूर्ति को शहर में गाली देते हुए घुमाकर,लाकर आग लगा देते हैं।

जर्मनी में ईस्टर के समय पेड़ों को काटकर गाड़ दिया जाता है। उनके चारों तरफ घास-फूस एकत्र करके आग लगा दी जाती है। इस समय लोग एक-दूसरे के मुख पर विविध रंग लगाते हैं। स्वीडन नार्वे में शाम के समय किसी प्रमुख स्थान पर अग्नि जलाकर लोग नाचते-गाते और उसकी प्रदक्षिणा करते हैं। साइबेरिया में बच्चे घर-घर जाकर लकड़ियाँ एकत्र करते हैं। शाम को उसमें आग लगाकर स्त्री-पुरुष हाथ पकड़कर तीन बार अग्नि परिक्रमा कर उसको लांघते हैं। अमेरिका में होली का त्योहार '**हेलोइन**' के नाम से 31 अक्टूबर को मनाया जाता है। इस अवसर पर शाम के समय नाचने-गाने, खेलने की परंपरा है।

देश के विभिन्न क्षेत्रों में हैं होली मनाने के अलग ढंग -

बहुआयामी भारत देश के अलग अलग भागों में होली का रंग और ढंग भी अलग - अलग होता है। उत्तर प्रदेश में ही बनारसी होली, ब्रज का रास-रंग, नंदगांव - बरसाने की लठ्ठमार होली, भोजपुरिया होली, अवध की होली, कानपुर की होली आदि स्थानों में होली का रंगबिरंगा उत्सव देखते ही बनता है। इसके अतिरिक्त देश के हर राज्य और हर समाज में यथा - असमी, पंजाबी, उड़िया, गुजराती, मारवाड़ी, मराठी, बंगाली, मणिपुरी, हरियाणा, राजस्थानी आदि में रंगो के त्योहार को मनाने के अपने-अपने तरीके हैं।

होली पर्व का है वैज्ञानिक आधार -

भारत के ऋषि-मुनि तत्कालीन वैज्ञानिक थे। उनका चिंतन-दर्शन विज्ञान की कसौटी पर खरा-परखा, प्रकृति के साथ सामंजस्य स्थापित करता रहा है। विश्व में भारत ही एक मात्र ऐसा देश है, जिसके त्योहार, पर्व, पूजा-पाठ, संस्कार, धार्मिक आयोजन आदि सब विज्ञान पर आधारित है। होली पर्व के में भी विज्ञान-ज्ञान की अवधारणा समाविष्ट है। रात्रि को संपन्न होने वाला होलिका दहन जाड़े और गर्मी की ऋतुसंधि में प्रस्फुटित होने वाले रोग चेचक, मलेरिया, खसरा, डेंगू, कोरोना तथा अन्य संक्रामक रोगों के कीटाणुओं के विनाश का सामूहिक अभियान है। स्थान - स्थान पर प्रदीप्त अग्नि आवश्यकता से अधिक ताप द्वारा समस्त वायुमण्डल को ऊष्ण बनाकर सर्दी में उत्पन्न रोग कीटाणुओं और जीवाणुओं को विनष्ट कर देती है। होली प्रदक्षिणा के अंतर्गत 140 डिग्री फारेनहाइट तक का ताप शरीर में समाविष्ट होने से मानव के शरीरस्थ समस्त हानिकारक जीवाणुओं को नष्ट कर देता है। होली के अवसर पर होने वाले नाच-गान, हास-परिहास, हुड़दंग, विविध स्वांग भी वैज्ञानिक दृष्टि से स्वस्थ मनोरंजन हैं। एक-दूसरे से गले मिलने से परस्पर आत्मीयता और सौहार्द्र बढ़ता है। महर्षि सुश्रुत ने वसंत को कफ पोषक ऋतु माना है -

कफश्चितो हि शिशिरे वसंतेअकार्शु तापितः।
हत्वाग्निं कुरुते रोगानातस्तं त्वरया जयेतु।।

अर्थात शिशिर ऋतु में एकत्र हुआ कफ, वसंत में पिघलकर कुपित होकर जुकाम, खांसी, श्वास, दमा आदि रोगों की सृष्टि करता है। इसके निदान के लिए तीक्ष्ण वमन, लघु रुक्ष भोजन, व्यायाम आदि आवश्यक है। ऊँचे स्वर में बोलना, नाचना, कूदना, दौड़ना - भागना सभी उपयोगी क्रियाएँ हैं। इस दृष्टि से होली का त्योहार बहुत महत्वपूर्ण है।

बाजारवाद ने बदला है होली का स्वरूप -

सांस्कृतिक क्षरण, बाजारवाद, उपभोक्तावाद और सतत नैतिक मूल्यों के पतन से समाज से पर्वों का उत्साह और आनंद भी विलुप्त होने की ओर अग्रसर है। इससे होली का त्योहार भी अछूता नहीं है। बाजारवाद ने युवा पीढ़ी को मानसिकता से संवेदनाओं और भावनाओं को विस्मृत करने का प्रयास किया है। नाते-रिश्तों पर भी ग्रहण लग चुका है। परस्पर समता, समरसता, एकजुटता, सद्भाव और आनंदित होकर होली मनाने की उमंग में कमी आई है। पर्व का वैज्ञानिक महत्व, ऋतु परिवर्तन एवं फसलों के उत्पादन से जुड़े होने के बाद भी लोग भारतीय परंपराओं से दूर हो रहे हैं। अतः जीवन के रसों में रंग, सकारात्मकता और ताजगी लाने के लिए होली के संदेश को पुनः जीवंत करने की आवश्यकता है।

होली का संदेश -

होली के त्योहार का स्पष्ट संदेश यह है कि जमी हुई गंदगी को दूर करें, मार्ग में बिछे हुए कष्टदायक और हानिकारक तत्वों को हटाएँ। गली-मुहल्ले की साफ-सफाई करके स्वच्छता और शुद्धता का वातावरण उत्पन्न करें। चारों ओर पवित्रता की स्थापना करें। प्राकृतिक, मानसिक, शारीरिक, सामाजिक तथा राजनीतिक विकृतियों में आग लगाकर उत्सव मनाएँ। अश्लील तथा अभद्र शब्दों का प्रयोग, कीचड़-मिट्टी फेंकना, किसी के प्रति क्रूरता-पशुता एवं असभ्यता का प्रदर्शन बंद करें। होली पर आनंद प्राप्ति के लिए आपसी प्रेम और भाईचारे को बढ़ावा दें। शराब पीने, जुआ खेलने, दूसरों को मानसिक आघात पहुँचाने जैसे दुर्गुणों का त्याग करें। **होली प्राकृतिक रंगों और फूलों से ही खेलें। हम अपने विकारों को होलिका में जलाकर पवित्र और पावन बनने का संकल्प लें तभी वास्तविक होली का आनंद हम सबको मिल सकता है।**

- गौरीशंकर वैश्य जी, 'विनम्र', आदिलनगर, विकासनगर (लखनऊ)

देश की पहली साहित्यिक ई-पत्रिका जो पठनीय-श्रवणीय-दर्शनीय है । पत्रिका में दिए गए ऑडियो-वीडियो का निर्मल आनंद उठाया जा सकता है।

मूल्य : मात्र आपकी मुस्कान

8610502230
(केवल संदेश हेतु)
(कृपया अपना नाम व शहर का नाम भी लिखें)

सामने दिए गए चिह्न को दबाने से आपका संदेश स्वचलित रूप से हमें पहुँच जाएगा और नियमित पत्रिकाएँ भेजने के लिए आपका मोबाइल नं.पंजीकृत हो जाएगा।

MX CREATIVITY

Brand Creation & Digital Marketing

LOOKING FOR CREATIVE TALENTS?

"We Love Being Creative
You Love Results
So We Focus On Both"

WHY YOU NEED US?
WE DESIGN YOUR DREAM.....

Unleash creativity beyond limits with our innovative solutions at MX Creativity. Where ideas take flight, and visions come to life, we redefine possibilities in the world of design and innovation.

WEB DESIGN & DEVELOPMENT

Elevate your online presence with our expert Web Design and Development services – where innovation meets seamless functionality for a captivating digital experience.

APPS DESIGN & DEVELOPMENT

Transform ideas into interactive reality with our cutting-edge mobile app development. Amplify your reach and engagement through strategic marketing that propels your app to success in the digital landscape.

PRINT DESIGN & BRAND IDENTITY

Bring your brand to life on paper with our dynamic print media solutions. Elevate your identity through impactful branding that leaves a lasting impression in the tangible world.

www.mxcreativity.com
info@mxcreativity.com

Get In Touch Now..!
+91 8080 5187 45

बुरा
ना
मानो
होली
है
www.bhartiyaparampara.com